उद्यमियों के कौषल उन्नयन हेतु सूक्ष्म, लघु मध्यम उद्यम–विकास संस्थान की भूमिकाः मध्यप्रदेष राज्य के विषेष संदर्भ में

डॉ अंजली पाण्डेय (सहायक प्राध्यापक दे.अ.वि.वि.– मातेष्वरी सुगनादेवी कन्या महाविद्यालय)

षोधार्थी :– तारा त्रिवेदी (पी.एम.बी. गुजराती वाणिज्य महाविद्यालय इंदौर, मध्यप्रदेष, भारत)

सारांषः– सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम क्षेत्र का भारतीय अर्थव्यवस्था में महत्व को नकारा नही जा सकता। वर्तमान में यह क्षेत्र अर्थव्यवस्था के लिए प्रथम स्थान पर बना हुआ हैं। पृथ्वी पर अनेक लोग निवास करते हैं, कुछ लोग भाग्य पर ही विष्वास कर जीते हैं, तथा कुछ लोग अपने मेहनत और परिश्रम पर जीते हैं। मेहनत और परिश्रम पर जीने वाले व्यक्ति ही ऊँचाईयों के षिखर तक पहूँच पाते हैं। परिश्रमी लोग दिन प्रतिदिन परिश्रम करके ही अपने अंदर नए गुणों का विकास करतें हैं। इन गुणों का विकास करना ही कौषल विकास कहलाता हैं। भारतीय अर्थव्यवस्था स्वतंत्रता प्राप्ति के पष्चात् भी एक विकासषील अर्थव्यवस्था बनी हुई हैं। विकासषील देषो के लिए सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम क्षेत्र प्रेरणा के रुप में उभरा हैं। वर्तमान में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम क्षेत्र का योगदान निर्यात में 40 प्रतिषत, विनिर्माण में 45 प्रतिषत, एवं सकल घरेलु उत्पाद में 8 प्रतिषत हैं।

मुख्य षब्द :–सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम–विकास संस्थान, कौषल विकास, भारतीय अर्थव्यवस्था, सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम

प्रस्तावना :– किसी भी देष के आर्थिक विकास में उस देष की श्रमषक्ति अर्थात जनसंख्या का सर्वाधिक प्रभाव पडता हैं। श्रमषक्ति का प्रत्येक देष में अपना विषिष्ट महत्व हैं। किसी देष की उन्नति को जानने में उस देष की जनसंख्या की काफी भूमिका होती हैं। इसके उचित उपयोग द्वारा देष के विकास में महत्वपूर्ण वृद्धि ला सकतें हैं।

प्रो. हेबसन ने लिखा हैंः– *"किसी देष की वास्तविक संपत्ति उसकी भूमि, भवन, जल, वन, खाद्य, पषु या डॉलरों में निहित न होकर, उस राष्ट्र के धनी प्रसन्न जन समुदाय, स्त्रियों और बच्चों में निहित होती हैं।"*

भारत में युवाओं की जनसंख्या सर्वाधिक हैं। इस कारण इसे युवा देष कहने में कोई आपत्ति नही होगी। परन्तु यहाँ अधिकांष जनसंख्या बेरोजगारी के चंगुल से ग्रस्त है, जिसका एकमात्र कारण हैं, युवाओं के कौषल में कमी होना। कौषल विकास के अभाव में डिग्रिया प्राप्त नवयुवक भी बेरोजगारी से ग्रस्त हैं। वर्तमान में युवा अनेक डिग्रीया तो हासिल कर चुके हैं, परन्तु उनके पास पर्याप्त ज्ञान की कमी है। इस कारण वे नौकरिया पाने से वंचित रह जाते हैं। इन्ही कारणों को ध्यान में रखतें हुए सरकार ने युवाओं को उचित प्रषिक्षण प्रदान करने हेतु न केवल कदम उठाए हैं, अपितु ये प्रयास इस दिषा में कामगार सिद्ध हुए हैं।

कौषल विकास का आषय :– कौषल विकास का सामान्य अर्थ हैं, व्यक्ति को किसी कार्य में उचित रुप से प्रषिक्षित करना, जिससे वह राष्ट्र निर्माण में योगदान कर सकें। किसी कार्य में निपूण होना ही कौषल विकास कहलाता हैं। भारत की युवा षक्ति को सही दिषा में ले जाना तथा उन्हें मंजिल तक पहुँचाने की कला भी कौषल विकास हैं। कौषल विकास के तीन मंत्र माने जाते हैंः– गति , परिमाण , और गुणवत्ता। इन गुणो के आधार पर कौषल का विकास हो सकता हैं।

सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम–विकास संस्थानः– भारत सरकार द्वारा सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों के विकास एवं संवर्द्धन के लिए सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय की स्थापना की। एवं प्रत्येक राज्य के सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों के उन्नयन के लिए सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम–विकास संस्थान की स्थापना की हैं। यह विकास संस्थान उद्यमियों को उचित तकनीकी–आर्थिक एवं प्रबंधकीय परामर्ष

सुविधाएं प्रदान करते हैं। साथ ही उद्यमियों को व्यापार कैसे स्थापित करना हैं? कहाँ स्थापित करना हैं? कब स्थापित करना हैं? इसका उचित परामर्ष देते हैं। इसके अतिरिक्त वैष्विक प्रतिस्पर्धा का सामना करने हेतु विभिन्न कार्यक्रमों का कार्यान्वयन करते हैं। सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमियों के कौषल को उन्नत करने हेतु विभिन्न प्रषिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं। इन कार्यक्रमों में उद्यमिता कौषल विकास के साथ इलेक्ट्रॉनिक, इलेक्ट्रिकल्स, खाद्य संस्करण इत्यादि क्षेत्र में उद्यमियों को विषिष्ट कौषल प्रदान किए जाते हैं। सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम–विकास संस्थान द्वारा निम्न प्रषिक्षण कार्यक्रमों का क्रियान्वयन किया जाता हैः–

1 उद्यमिता विकास कार्यक्रमः– सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम–विकास संस्थान द्वारा उद्यमियों की प्रतिभा एवं उनके कौषल उन्नयन के लिए प्रषिक्षण प्रदान किया जाता हैं। जिससे वे स्वयं अपना व्यवसाय स्थापित कर सके या लघु उद्योग स्थापित कर सके। इस कार्यक्रम के अंतर्गत उत्पाद की डिजाइन, विनिर्माण, तकनीकी उत्पाद मूल्य, निर्यात संवर्द्धन इत्यादि के बारे में जानकारी प्रदान की जाती हैं। सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम–विकास संस्थान, इंदौर द्वारा उद्यमियों को प्रषिक्षण प्रदान करने हेतु आयोजित किए जाने वाले उद्यमिता विकास कार्यक्रमों की संख्या एवं प्रषिक्षित व्यक्तियों की संख्या को तालिका क्रमांक 1.1 में इस प्रकार दर्षाया गया हैः–

तालिका क्रमांक 1.1

उद्यमिता विकास कार्यक्रमों की संख्या एवं प्रषिक्षित व्यक्तियों की संख्या

वर्ष	कार्यक्रमों की संख्या	प्रषिक्षित व्यक्तियों की संख्या
2012–13	42	955
2013–14	42	991
2014–15	11	266
2015–16	31	748
2016–17	3	67
कुल	129	3027

स्त्रोतः– सूलमउ विकास संस्थान, इंदौर वार्षिक रिपोर्ट

2 उद्यमिता कौषल विकास कार्यक्रमः– संस्थान द्वारा भावी उद्यमियों एवं विद्यमान उद्यमियों के कौषल को उन्नत करने के साथ ही सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों के नए कर्मचारियों तथा तकनीषियनों के कौषल को विकसित करने के लिए उद्यमिता कौषल विकास कार्यक्रमों का क्रियान्वयन किया जाता हैं। संस्थान द्वारा कम विकसित क्षेत्रों, पिछडा वर्ग, अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति अल्पसंख्यक व महिलाओं के लिए विषेष कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। इन कार्यक्रमों के अंतर्गत वेल्डिंग, हर्बल कास्मेटिक, फैषन गारमेंट, खाद्य व फल प्रसंस्करण उद्योग इत्यादि विषयों पर प्रषिक्षण प्रदान किया जाता हैं। सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम–विकास संस्थान, इंदौर द्वारा उद्यमियों को प्रषिक्षण प्रदान करने हेतु आयोजित किए जाने वाले उद्यमिता कौषल विकास कार्यक्रमों की संख्या एवं प्रषिक्षित व्यक्तियों की संख्या को तालिका क्रमांक 1.2 में इस प्रकार दर्षाया गया हैः–

तालिका क्रमांक 1.2

उद्यमिता कौषल विकास की संख्या एवं प्रषिक्षित व्यक्तियों की संख्या

वर्ष	कार्यक्रमों की संख्या	प्रषिक्षित व्यक्तियों की संख्या
2012–13	139	3260
2013–14	116	2706
2014–15	78	1811
2015–16	नहीं	नही
2016–17	14	333
कुल	**347**	**8110**

स्त्रोतः– सूलमउ विकास संस्थान, इंदौर वार्षिक रिपोर्ट

3 प्रबंधन विकास कार्यक्रमः– संस्थान द्वारा विद्यमान व भावी उद्यमियों की उच्च उत्पादकता और लाभदायकता को प्रेरित करने हेतु नए उद्यम को विकसित करने हेतु प्रबंधन विकास कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता हैं। इन प्रषिक्षण कार्यक्रमों के अंतर्गत औद्योगिक प्रबंधन, मानव संसाधन प्रबंधन, विपणप प्रबंधन, निर्यात प्रबंधन, सामग्री प्रबंधन एवं वित्तीय प्रबंधन जैसे विषयों पर कार्यक्रम चलाए जाते हैं। यह लघु अवधि के कार्यक्रम हैं, इसमें 60 तरह के अलग–अलग प्रषिक्षण देने की व्यवस्था हैं। सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम–विकास संस्थान, इंदौर द्वारा उद्यमियों को प्रषिक्षण प्रदान करने हेतु आयोजित किए जाने वाले प्रबंधन विकास कार्यक्रमों की संख्या एवं प्रषिक्षित व्यक्तियों की संख्या को तालिका क्रमांक 1.3 में इस प्रकार दर्षाया गया हैः–

तालिका क्रमांक 1.3

प्रबंधकीय विकास कार्यक्रमों की संख्या एवं प्रषिक्षित व्यक्तियों की संख्या

वर्ष	कार्यक्रमों की संख्या	प्रषिक्षित व्यक्तियों की संख्या
2012–13	28	671
2013–14	28	595
2014–15	7	145
2015–16	नही	नही
2016–17	नही	नही
कुल	63	1411

स्त्रोतः– सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम विकास संस्थान, इंदौर वार्षिक रिपोर्ट

4 औद्योगिक अभिप्रेरणा अभियानः– सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों की स्थापना की क्षमता रखने वाले पारंपरिक व गैर–पारंपरिक उद्यमियों की पहचान और इन्हें अभिप्रेरित करने के लिए संस्थान द्वारा औद्योगिक प्रेरणा अभियानों का आयोजन किया जाता हैं, जिससे उन्हें स्वरोजगार के लिए प्रेरित किया जा सके। यह अभियान एक या दो दिन की अवधि का होता हैं। सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम–विकास संस्थान, इंदौर द्वारा उद्यमियों को प्रषिक्षण प्रदान करने हेतु आयोजित किए जाने वाले औद्योगिक अभिप्रेरणा अभियानों की संख्या एवं प्रषिक्षित व्यक्तियों की संख्या को तालिका क्रमांक 1.4 में इस प्रकार दर्षाया गया हैः–

तालिका क्रमांक 1.4

अभिप्रेरणा अभियान कार्यक्रमों की संख्या एवं प्रषिक्षित व्यक्तियों की संख्या

वर्ष	कार्यक्रमों की संख्या	प्रषिक्षित व्यक्तियों की संख्या
2012–13	142	11666
2013–14	142	9384
2014–15	64	4547
2015–16	35	2410
2016–17	16	1177
कुल	399	29184

स्त्रोतः– सूलमउ विकास संस्थान, इंदौर वार्षिक रिपोर्ट

उपरोक्त कायक्रमों के अतिरिक्त सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम–विकास संस्थान द्वारा सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योगों एवं उद्यमियों के कौषल उन्नयन के लिए विभिन्न कार्यक्रमों जैसे राष्ट्रीय विनिर्माण प्रतिस्पर्धात्मकता कार्यक्रम, विक्रेता विकास कार्यक्रम, क्लस्टर विकास कार्यक्रमों का क्रियान्वयन करता हैं। ये कार्यक्रम उद्यमियों के लिए प्रमुख मार्गदर्षक व सहायक हैं।

उपसंहारः– सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम क्षेत्र अर्थव्यवस्था की दिषा में कई तरह से योगदान देता है, जैसे– ग्रामीण व षहरी आबादी के लिए रोजगार के अवसर पैदा करना व उन्हें सस्ती कीमत पर माल व सेवाएँ प्रदान करना इत्यादि। सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम विषेष रुप से प्रथम पीढी के उद्यमियों के संवर्द्धन के लिए उद्यमिता विकास के प्रमुख घटकों में से एक हैं। सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमियों के कौषल को उन्नत करने हेतु यह विकास संस्थान कारगर साबित हुआ हैं। संस्थान द्वारा चलाए जाने वाले कार्यक्रमों से उद्यमियों को लाभान्वित होना चाहिए, जिससें वे बेरोजगारी के युग में रोजगार प्राप्त करने में सफल हो सके। इससे निष्चित रुप से बेरोजगारी को समाप्त किया जा सकता हैं। जो देष के आर्थिक विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं।

संदर्भ–ग्रंथः–

- एमएसएमई ई–बुक जनवरी 2016
- सूक्ष्म,लघु एवं मध्यम उद्यम–विकास संस्थान, इंदौर वार्षिक रिपोर्ट वर्ष 2012–13 से वर्ष 2016–17
- www.msme.nic.in
- www.msme.gov.in
- www.dcmsme.gov.in
- www.msmeindore.nic.in
- www.mpindustry.gov.in
- www.wiki.msme.mp.gov.in